

No. of Printed Pages: 4

### 2017

## QCA/BC: CUSYFB-55

## अंग्रेजी से हिन्दी में और हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद

# Translation from English to Hindi and from Hindi to English

समय : तीन घण्टे]

अधिकतम अंक : 100

Time Allowed: Three Hours

[Maximum Marks: 100

नोट : सभी प्रश्न हल करे । प्रत्येक प्रश्न के अन्त में निर्धारित अंक अंकित हैं।

Note: Candidates should attempt all questions. Marks carried by each question are indicated at its

end.

### PART - I

(Translation from English to Hindi)

1. Translate the following Press communique from English into Hindi:

30

### **Draconian Move**

Tamil Nadu Raj Bhawan must be made aware of the risks of the misuse of Section 124.

Journalists have been hauled up in the past for writing allegedly objectionable articles. But the arrest of R.R. Gopal, Editor of the Tamil magazine *Nakkheeran*, Chennai, on a trumped-up charge under a rarely used section of the Indian Penal Code is an extraordinary instance of abuse of power. The Tamil Nadu Governor's office had complained to the police, seeking to book Mr. Gopal under Section 124 of the IPC, eiting some articles published in the magazine. This section, seldom used even in colonial times, applies to assaulting high constitutional functionaries such as the President and the Governor with "an intent to compel or restrain the use of any lawful power". It is plain as day that it was never intended to cover writing articles but rather cases where these functionaries are prevented from exercising their power though criminal force, attempts to overawe, or wrongful restraint. Whether the articles in question were in bad taste is the subject for a separate debate. The point is that, however offensive or derogatory, they did not attract Section 124. In an environment where the lower judiciary reflexively signs remand orders, the Metropolitan Magistrate in Chennai must be commended for realizing the absurdity of the prosecution's case and declining to jail Mr. Gopal.

Governor Banwarilal Purohit is no stranger to Section 124, having threatened a few months ago to use it when the DMK staged black flag demonstrations at sites where the Governor held meetings with district-level officials. It is doubtful whether a black flag demonstration can be construed as an attempt to "overawe" the Governor in a manner that restrains his office from exercising power. Overawe, at the very least, would suggest the commission of an offence that poses a real danger to the exercise of authority. Of course, to extend the meaning of "overawe" to a work of journalism is simply ridiculous. So is the claim in the police complaint prepared by the Deputy Secretary to the Governor that the



offending articles express an "intention of inducing or compelling the Governor...to refrain from exercising his lawful powers". The articles had linked Mr. Purohit's name to the controversy surrounding assistant professor Nirmala Devi, who is in jail for allegedly trying to lure students into sex work. If Mr. Purohit believed they were unfounded and damaged his reputation, there were other forms of legal redress available to him. By citing them to seek registration of a Section 124 case against the magazine's Editor, journalists and employees, the Governor's office has only turned the spotlight on itself unnecessarily. He would do himself a favour by withdrawing the complaint; it is unlikely the Tamil Nadu police will take such a decision on its own.

2. Translate the following extract from English into Hindi:

10

10

Powers and functions of the Information Commissions, appeal and penalties

- (1) Subject to the provisions of this Act, it shall be the duty of the Central Information Commission or State Information Commission, as the case may be, to receive and inquire into a complaint from any person,
  - (a) who has been unable to submit a request to a Central Public Information Officer or State Public Information Officer, as the case may be, either by reason that no such officer has been appointed under this Act, or because the Central Assistant Public Information Officer or State Assistant Public Information Officer, as the case may be, has refused to accept his or her application for information or appeal under this Act for forwarding the same to the Central Public Information Officer or State Public Information Officer or senior officer specified in sub-section (1) of section 19 or the Central Information Commission or the State Information Commission, as the case may be;
  - (b) who has been refused access to any information requested under this Act;
  - (c) who has not been given a response to a request for information or access to information within the time limit specified under this Act;
  - (d) who has been required to pay an amount of fee which he or she considers unreasonable;
  - (e) who believes that he or she has been given incomplete, misleading or false information under this Act; and
  - (f) in respect of any other matter relating to requesting or obtaining access to records under this Act.
- **3.** Explain and comment upon the following words / expressions used in question nos. 1 and 2:

1. draconian

2. haul up

3. trumped-up

4. restrain

5. plain as day

6. overawe

7. derogatory

8. reflexively

9. no stranger to

10. construe



#### PART - II

### (हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद)

समाचार पत्र में प्रकाशित निम्नलिखित गद्य अवतरण का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए :

30

#### कीमतों का गणित

भले ही स्थित परेशान करने वाली न हो, लेकिन आंकड़े चिंतित करने वाले तो हैं ही । सोमवार को केंद्र सरकार ने महंगाई के पिछले महीने के जो आंकड़े पेश किए हैं, वे अर्थव्यवस्था के रुझान के बारे में बहुत कुछ कहते हैं । सितंबर महीने में थोक मूल्य सूचकांक पर आधारित महंगाई यानी मुद्रास्फीति 4.53 प्रतिशत पर रही, जबिक अगस्त महीने में यह 3.14 प्रतिशत पर थी। इन आंकड़ों के विस्तार में जाए, तो तस्वीर कुछ और ही कहती है । एक तरफ यह महंगाई बढ़ रही है, खाद्य पदार्थों की कीमतें काफी तेजी से नीचे आई हैं । अगस्त महीने में खाद्य पदार्थों की महंगाई 4.04 प्रतिशत पर थी, जो पिछले महीने शून्य से भी नीचे चळी गई। और सिद्धारों के मामले में कीमतें जिस तेजी से नीचे गई हैं, वह तो चिंता पैदा करने वाला है । अगस्त महीने में सिद्धारों की मुद्रास्फीति 20.18 फीसदी थी, जो सितंबर में शून्य से नीचे जाकर — 3.83 प्रतिशत पर रुक गई है । दालों के मामले में हालात और भी चिंताजनक हैं । अर्थशास्त्र में महंगाई यानी मुद्रास्फीति का बहुत ज्यादा या बहुत तेजी से बढ़ना चिंताजनक माना जाता है, लेकिन अगर यही मुद्रास्फीति शून्य से नीचे जाने लगे, तो इसे संकट की तरह देखा जाता है । हालांकि एक महीने के आंकड़ों से हम कोई बहुत बड़ा नतीजा नहीं निकाल सकते, लेकिन खाद्य मुद्रास्फीति के ये आंकड़े आने वाले समय में किसानों की मुसीबतें बढ़ा सकते हैं । खाद्य पदार्थों की घटती कीमतों के बीच थोक मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रास्फीति के बढ़ने का राज छिपा है ईंधन की बढ़ती कीमतों में । पिछले महीने पेट्रोल की मुद्रास्फीति 17.21 प्रतिशत रही, जबिक डीजल की 22.18 प्रतिशत । हालांकि ये आंकड़े बताते हैं कि इस बीच खुदरा मुद्रास्फीति बहुत ज्यादा नहीं बढ़ रही । अगस्त में वह 3.69 प्रतिशत थी, जो सितंबर में बढ़कर 3.77 प्रतिशत हो गई। इसके साथ ही फैक्टरियों में बने उत्पादों के दाम भी बढ़े हैं।

ये आंकड़े चौंकाने वाले भले ही हों, लेकिन बहुत ज्यादा परेशान करने वाले इसिलए नहीं है, क्योंकि त्योहारों के इस मौसम में अर्थव्यवस्था का रुझान बहुत कुछ ऐसा ही रहता है। बरसात में खाद्य पदार्थों के वितरण में मौसम की वजह से बाधा आती है, इसिलए उनकी कीमतें बढ़ जाती हैं। सितंबर महीने में जब यह बाधा कम होती है, तो कीमतें तेजी से नीचे आती हैं। खरीफ की नई फसल बाजार में आने के कारण भी यह होता है। लेकिन इस मुद्रास्फीति का शून्य से नीचे चले जाना ऐसा रुझान है, जिसके बाद आपात कदम उठाए जाने की जरुरत है।

हालांकि ये आंकड़े सितंबर महीने के हैं और इस महीने से शुरू हो चुके त्योहारों के मौसम में बाजार में खाद्य पदार्थों की मांग बढ़ेगी, तो संभव है कि उनकी मुद्रास्फीति भी सही स्तर पर आने लगे। लेकिन असल समस्या पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतों में वृद्धि की है। पेट्रोल और डीजल की कीमतें जब बढ़ती हैं, तो उनका असर कई तरह से सभी चीजों की कीमतों, पूरे बाजार और पूरी अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। यह ऐसा मसला है, जिसे सरकार भी समझ रही है, इसीलिए उसने टैक्स कम करके पेट्रोल की कीमत को सही राह पर लाने की एक कोशिश भी की। हालांकि यह समस्या दोहरी है। एक तरफ, विश्व बाजार में पेट्रोलियम के भाव बढ़ रहे हैं और दूसरी तरफ दुनिया के बाजार में रुपये की कीमत गिर रही है। जाहिर है, इन दोनों की ही मार उपभोक्ताओं पर पड़नी ही है।



- निम्नलिखित राब्द / राब्द युग्मों का अंग्रेजी में पर्याय लिखिए एवं अंग्रेजी में संक्षिप्त व्याख्या कीजिये :
- 10

- अर्थव्यवस्था
- रुझान 2.
- थोक मूल्य सूचकांक 3.
- मुद्रास्फीति 4.
- खाद्य पदार्थ 5.
- आंकड़े 6.
- खुदरा मुद्रास्फीति 7.
- खरीफ 8.
- असल समस्या
- 10. आपात कदम
- प्रक्रन सं 1 के आधार पर निम्निलेखित की व्याख्या अंग्रेजी में कीजिये :

- सूचकांक शून्य से नीचे जाने का प्रभाव 1.
- पेट्रोल की कीमत बढ़ने का प्रभाव 2.
- मुद्रास्फीति का किसानी पर प्रभाव 3.
- चौंकाने वाले आंकड़े 4.
- त्यौहार के मौसम में अर्थव्यवस्था का रुझान 5,